डी0एफ0आई0डी0 (DFID) द्वारा प्रायोजित पैक्स परियोजना से जुड़े हुए
स्वैच्छिक संस्थाओं के विकास कर्मियों हेतु
सहयोगी संस्था नीड, लखनऊ द्वारा **माइक्रो–इण्टरप्राइज कार्यक्रम हेतु"**
तीन दिवसीय सघन प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनाँकः नवम्बर 24–26, 2005 **स्थानः–** तारा ग्राम, ओरछा, झाँसी

रिपोर्ट

प्रशिक्षण में आये सभी प्रतिभागी एवं प्रशिक्षक सामूहिक रूप में

प्रायोजक :
डी.एफ.आई.डी.
पैक्स कार्यक्रम, डेवलपमेन्ट एलटरनेटिव, 111, जेड/9, बसन्त कुंज,
किषन गढ़, नई दिल्ली–03 **दूरभाष** : (011) 26130817

क्षेत्रीय सहभागी सहयोग
डेवलपमेंन्ट एलटरनेटिव, तारा ग्राम, ओरछा,
झाँसी–284001, यू0पी0, इण्डिया **दूरभाष** : (0517) 2707368

A CATALYST CUM FACILITATING BODY
NEED

आयोजक :
उद्यमिता एवं आर्थिक विकास केन्द्र (नीड)
39, नील विहार, सेक्टर 14 पावर हाउस के समीप, इन्दिरा नगर, लखनऊ 226 016
दूरभाष : (0522) 2712671, 2712673, **फैक्स** : (0522) 2302694

डी0एफ0आई0डी0 (DFID) द्वारा प्रायोजित पैक्स परियोजना से जुड़े हुए **स्वैच्छिक संस्थाओं के विकास कर्मियों हेतु**

सहयोगी संस्था नीड, लखनऊ द्वारा " माइक्रो–इण्टरप्राइज **कार्यक्रम हेतु**"

तीन दिवसीय सघन प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक :– 24–26 नवम्बर, 2005
स्थान :– डी0ए0, तारा ग्राम, ओरछा, झाँसी

डी0ए0, तारा ग्राम, ओरछा, झाँसी के सक्रिय सहयोग एवं डी0एफ0आई0डी0, नई दिल्ली के प्रायोजन में नीड, लखनऊ द्वारा डी0एफ0आई0डी0 की पार्टनर्स संस्थाओं के विकास कर्मियों कर्मियों हेतु दिनांक 24–26 नवम्बर, 2005 तक ''**माइक्रो–इण्टरप्राइज प्रशिक्षण कार्यक्रम**'' डी0ए0, तारा ग्राम, ओरछा, झाँसी में बड़े ही क्रमबद्ध तरीके से पूर्व योजना के तहत संचालित किया गया। प्रशिक्षण के आयोजन में डी0 ए0, झाँसी के अनुभवी साथी संतोष पाठक, जूही, एवं अन्य सभी साथियों का भरपूर सहयोग रहा।

कार्यक्रम की मुख्य विषय वस्तु ग्रामीण प्राकृतिक संसाधन एवं प्रबन्धन के क्षेत्र से जुड़ें हुए पैकेज पार्टनर्स अथवा विकास कर्मियों की क्षमता में इस प्रकार की वृद्धि करना ताकि उनके रोज के अनुभव को व्यवहारिक रूप देकर कार्य में सहभागीय दृष्टि से ''माइक्रो–इण्टरप्राइज कार्यक्रम'' की स्पष्ट समझ बने जिससे ग्रामीण महिला एवं अन्य समुदाय हेतु उद्यमिता पर आधारित सतत विकास एवं सशक्तिकरण के माध्यम से विकास की गति में तीव्रता लाई जा सके।

तीनों दिन चले प्रशिक्षण की कार्य विधि का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है–

पहला दिन–24 नवम्बर, 2005

पहले दिन के प्रशिक्षण सत्र की शुरूआत तारा ग्राम, ओरछा के हॉल में चार्ट, पोस्टरों एवं बैनरों से सुसज्जित प्रशिक्षण कक्ष में नीड के मुख्य कार्यकारी श्री अनिल के. सिंह एवं तारा ग्राम के प्रशिक्षक समन्वयक सुश्री जूही, श्री संतोष पाठक, श्री राघवेष जी एवं सभी उपस्थित सहभागी साथियों के साथ एक परिचय के माध्यम से पहले दिन की शुरूआत की गयी। कार्यक्रम का उद्घाटन सामूहिक रूप से तारा ग्राम के साथियों एवं उनके सहयोगियों के द्वारा सुबह 10.00 बजे किया गया। सभी उपस्थित प्रतिभागियों का पंजीकरण भी सुबह के पहले प्रशिक्षण सत्र में पूर्ण किया गया एवं तत्पश्चात् स्थानीय तारा ग्राम के विकास कार्यो एवं परियोजनाओं की जानकारी भी

सभी प्रतिभागियों को एक वृतचित्र के माध्यम से गहन रूप से कराई गयीा। इसके उपरान्त नीड के मुख्य कार्यकारी श्री अनिल के. सिंह एवं उनके वरिष्ठ साथी श्री संदीप श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम का उद्देष्य, तरीका, भरपूर प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा सहभागिता आदि पर गहन रूप से चर्चा की गई। परिचय के माध्यम से एक दूसरे के नाम, शिक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं कार्यक्षेत्र आदि के बारे में पूछा गया परन्तु तुरन्त सभी प्रतिभागियों के द्वारा यह अहसास किया गया कि यह परिचय डाकिया वाला परिचय हुआ है जिससे एक दूसरे से सभी अभी भी परिचित नहीं हुए है। इसी सिलसिले के

नीड, लखनऊ के प्रशिक्षक श्री अनिल के. सिंह एवं प्रतिभागी माइक्रो–लैब अभ्यास के दौरान

साथ श्री अनिल के सिंह द्वारा **सूक्ष्म स्तरीय माइक्रोलैब** शुरू किया गया। माइक्रोलैब अभ्यास को कई चरणों में पूरा कराया गया जिसमें कभी दो के तो कभी 3–3 लोगों के समूहों में बांटकर एक दूसरे के नाम, शिक्षा, कार्यक्षेत्र की अच्छाइयां एवं कमियां तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि आदि पर चर्चा की गई। इसी प्रक्रिया में कभी धीरे कभी तेज चलकर एक दूसरे को सहारा दिया जिससे प्रतिभागियों में एक प्रकार की जागरूकता एवं उत्साह दिखाई दिया। इस अभ्यास के दौरान प्रतिभागियों के दैनिक जीवन से जुड़े उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता पर आधारित मुद्दों पर छोटे–छोटे समूहों के जरिये अपने–अपने अनुभवों का आदान–प्रदान किया गया। इस अभ्यास को प्रतिभागियों ने बड़े ही लगन से पूरा किया।

प्रतिभागियों को 'नीड' एवं डी0ए0 द्वारा तैयार की गई पाठ्य सामग्री एवं अन्य लिखने–पढ़ने की सामग्री आदि डी0ए0 तारा के द्वारा वितरित की गई।

माइक्रोलैब की प्रतिक्रिया जानने के उद्देश्य से श्री अनिल के. सिंह ने प्रतिभागियों से पूछा कि आपको फिलहाल इस समय अभ्यास के उपरान्त कैसा महसूस हो रहा है? प्रतिभागियों के निम्न विचार उभर कर आये□

- खुलेपन का अनुभव हुआ।
- हमारे अन्दर से संकोच की भावना दूर हुई।
- एक दूसरे के अनुभवों के आदान□प्रदान से सीख मिली।
- उद्यमी की परख, व्यावहारिक कुषलता एवं जुड़े दैनिक चुनौतियों का बोध हुआ।

- साथी को ले चलने में डर/भय की भावना दूर हुई।
- आत्म विश्वास में वृद्धि हुई।
- उद्यम एवं उद्यमी से जुड़े सामाजिक अनुषासन एवं उत्तरदायित्व की झलक प्रतीत हुई।
- सहभागी के द्वारा नई दिशा दिखाने में बल मिला।
- एक दूसरे में सहभागिता की भावना विकसित हुई।
- एक दूसरे में आदर सत्कार की भावना विकसित हुई।
- दोस्ती में विश्वास और भय का खुलासा हुआ।
- देख–रेख करते हुए बिना धोखा के साथ चलने का प्रयास।
- सीखने की ललक एवं उत्सुकता बढ़ी।
- उद्यमी जिन्दगी में मानवीय संसाधन से जुड़े शक्तियां, उपलब्धियॉ आदि मुद्दों के प्रति अहसास होना।
- मार्ग दर्शन की प्रेरणा एवं एकता का माहौल बना करके सीखने का मौका मिला।
- समानता एवं एक रूपता का माहौल बना।
- एक दूसरे के बीच अपनेपन की भावना का विकास हुआ।
- आंख बन्द किये हुए साथी के प्रति ममता एवं स्नेह का विकास।
- सीखने की ललक बढ़ी एवं प्रशिक्षण की प्रक्रिया के लिए माहौल बना।

प्रतिभागियों द्वारा उभरे उपरोक्त विचारों का उद्गम प्रत्येक का अलग–अलग है किन्तु जब इन सभी को एक साथ देखा जाता है तो काफी अच्छा लगता है और विकास की भावना को जन्म

देता है। जब प्रतिभागियों से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि शायद ये सारी बातें एक व्यक्ति द्वारा नहीं बताई जा सकती थी। किन्तु सबके अनुभव एक जगह आये हैं जो कि एक समूह के विचार लगते हैं जो स्वयं से शुरू होते हैं और समूह तक जाते हैं। श्री अनिल के. सिंह ने बताया कि किसी प्रकार की भावना उद्यमी के स्वयं के विचार से ही शुरू होती है और वह अपने अनुभव के मुताबिक आवश्यकता एवं जरूरत के साथ ताल्लुक करती है और आगे चलकर व्यवहार में बदल जाती है। यही भावना सीखने की प्रक्रिया को जन्म देती है जो स्वयं के साथ जुड़कर विकासात्मक माहौल बनाती है।

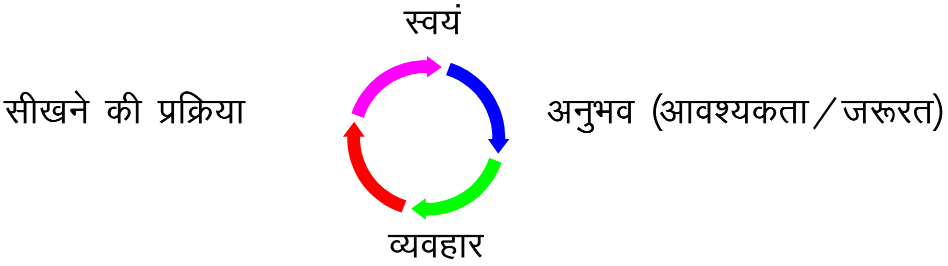

इसी के साथ श्री अनिल के. सिंह ने प्रशिक्षण का प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षाणार्थी के साथ तालमेल करते हुए बताया कि ये दोनों ही गाड़ी के दो पहिए हैं। दोनों को एक साथ चलना अति आवश्यक है जिससे प्रशिक्षण प्रभावी बन सके जो अन्त में दोनों के लिए एक पूंजी के समान दिखाई देती है। प्रशिक्षण के खातिर इन दोनों की मंजिल एक होनी चाहिए।

प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षणार्थी के बीच समस्तरीय तालमेल

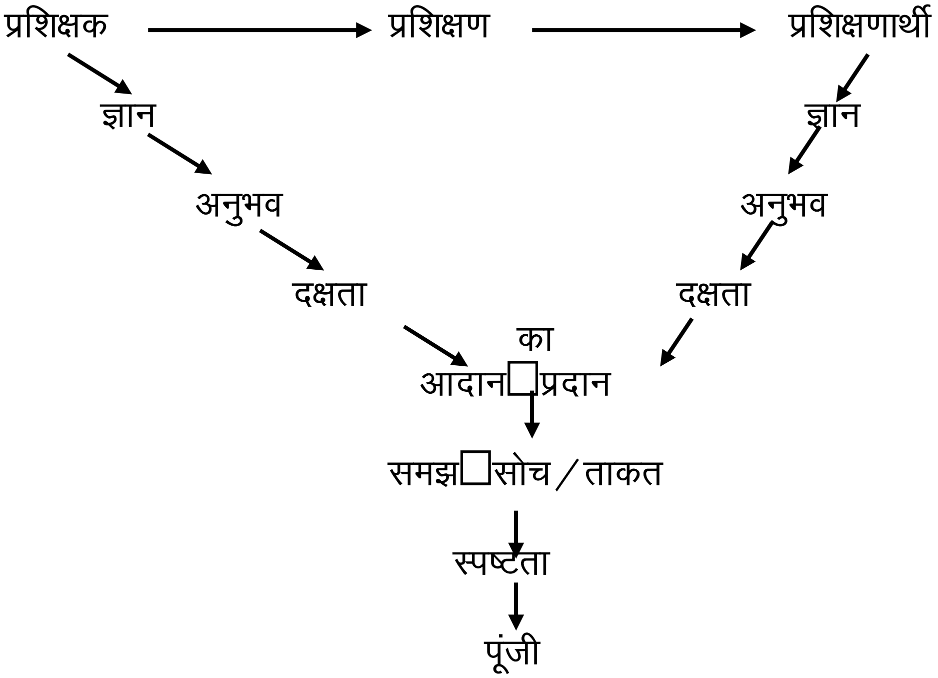

तत्पष्चात् भोजन के पूर्व चाय अवकाष के बाद नीड के प्रषिक्षकों के द्वारा प्रत्येक प्रतिभागी से यह जाना गया कि उनको इस तीन दिन के प्रषिक्षण कार्यक्रम से मुख्य रूप से क्या उम्मीद है और इस प्रकार से निम्नलिखित बिन्दु प्रतिभागियों के बीच से निकल कर आये–

- उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की समझ एवं इसकी आवष्यकतायें।
- स्वयं सहायता समूह से तालमेल।
- रोजगार के साथ जुड़ाव।
- उद्यमी के मानवीय संसाधन से जुड़े लक्षण।
- परियोजना का चयन एवं पहचान।

नीड, लखनऊ के प्रशिक्षक श्री अनिल के. सिंह एवं प्रतिभागियों के बीच सघन आदान–प्रदान

- परियोजना प्रपत्र निर्माण।
- स्थानीय बाजार के साथ तालमेल।

उपरोक्त अपेक्षाओं को केन्द्र में रखते हुए नीड के प्रषिक्षकों ने निम्नलिखित प्रष्नों से उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की व्यावहारिक समझ बनाने हेतु शुरूआत किया गया।

- क्या हम सभी को मालूम है कि हम महिलाएं पुरूषों की तुलना में एक श्रेष्ठ एवं कुशल प्रबन्धक के रूप में हमेशा अनुभव की जाती हैं?
- क्या हम सभी को मालूम है कि हम लोग अपने आप में एक संवेदनशील इंसान हैं?
- उद्यमी स्वरूप मानवीय पूंजी के समान साहस, धैर्य एवं संसाधनों का पक्का रखरखाव की परख हम सभी महिलाओं के अन्दर कूट–कूट कर भरी हुई है?
- हम सभी महिलाओं के अन्दर जोखिम को कम कर चुनौती का सामना करना तथा तत्पश्चात स्थिति पर नियन्त्रण करने की दक्षता पुरूषों के मुकाबले में हम सभी के पास कूट–कूट कर भरी हुई है?

- क्या एक कुशल गृहणी का व्यवहार एक सफल उद्यमी से नही मिलता–जुलता है?
- **मैं उद्यम के साथ उद्यमी थी, हूं एवं बनी रहूंगी ताकि हमारी उद्यमिता पर कोई आंच न आएं।**

उपरोक्त शब्द भले ही सुनने एवं समझने में अंजान लगे, परन्तु इन तीनों शब्दों से बने व्यापक अर्थ का उपयोग हम सभी महिलाएं अपने–अपने दैनिक जीवन में भिन्न–भिन्न स्तर पर करते आ रहे हैं। उदाहरण के रूप में देखें कि हमारे घर में रसोई घर को साफ सुथरा कौन रखता है, भिन्न–भिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन का निर्माण कौन करता है, रसोई घर के प्रयोग में आने वाली सामग्री की देख–रेख कौन करता है, समयानुसार उस कार्य के प्रबन्धन हेतु प्रबन्धक की भूमिका कौन करता है? ठीक उसी प्रकार से खेत–खलिहान, मजदूरी आदि की तैयारी कौन करता है? क्या ऐसा हम महिलाएं नही अनुभव करती हैं कि हमारी सोच, जुड़ाव, व्यवहार आदि गुणों से हीन घर से खेत–खलिहान तक एवं अन्य क्षेत्रों में प्रबन्धन करने में अपने आप को योग्य एवं क्षमतावान समझती हैं? इन्हीं प्रश्नों का उत्तर निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण बिन्दुओं को अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी के तहत तालमेल पैदा कर गहन रूप से समझना होगा।

1) उद्यम 2) उद्यमी 3) उद्यमिता

1) उद्यम

"नौबस्ता गांव की लीलावती जो एक महिला स्वयं सहायता समूह की सदस्या है, औसतन 3–4 घंटे प्रतिदिन समय निकालकर चिकन की कढ़ाई का कार्य 40 महिलाओं के साथ नियमित रूप से केन्द्र चलाती है। लीलावती बिचौलियों को पूर्णरूप से खत्म कर बाजार से माल लाती है तथा उसे 36 प्रकार की कढ़ाई कर पुनः माल बाजार मे भेजती है। इतना ही नही, अपने पति एवं लड़की के साथ मिलकर एक परिवार उद्यम के तहत अगरबत्ती, धूपबत्ती आदि पीढ़ पर बनाकर साप्ताहिक रूप में घूम–घूम कर लगभग 48 दुकानों पर अपने इस उद्यम को बेचती हैं। इन सभी प्रयासों से लीलावती अपने आप को बहुत ही लगनशील, प्रतियोगी एवं सदैव आगे और अच्छा करने की जिदद को साकार करने में सतत प्रयास के द्वारा लगी रहती हैं। इसी कारण तो उसे खेत–खलिहान के द्वारा इन उद्यमों से प्रतिमाह रू0 2500 से 3000 के बीच शुद्ध लाभ के रूप में कमाई होती है"।

इसके अलावा कितनी ही महिलाओं का रोजगार उसी गांव में इन उद्यमों के द्वारा सुनिश्चित किया जा रहा है। अतः उद्यम सिर्फ भौतिक रूप से पैसा कमाने के लिए ही नही बल्कि स्वयं में स्वावलम्बन के साथ दूसरों को भी प्रेरित कर एक साथ सामाजिक एवं **उद्यमी** आर्थिक उत्तरदायित्व को स्वावलम्बी के रूप में योग्य बनाता है। अगर हम इन उद्यमों के साथ अपने–अपने लक्ष्यों की पारदर्शिता स्थापित करने में प्रयासरत रहें तो इस प्रकार के कार्य को उद्यम कहकर पुकारते हैं।

2) उद्यमी

उद्यमी को अपनी बोलचाल की भाषा में अगर इस तरीके से समझ कर सीखने का प्रयास करें कि एक डॉक्टर अगर पुलिस इंसपेक्टर के जैसा व्यवहार एवं तरीका अपनाता है तो अमूमम इस प्रकार की डॉक्टर की क्लीनिक या नर्सिंग होम में कोई भी रोगी जाने से कतरा सकता है, भले ही डॉक्टर क्यों नही अच्छी–खासी पढ़ाई–लिखाई करके आया हो। ठीक उसी प्रकार से अगर पुलिस इंसपेक्टर एक डॉक्टर का जैसा अपना व्यवहार एवं तरीके को अपनाता है तो शायद समाज के गलत–सलत काम करने वाले लोग ऐसे पुलिस इंसपेक्टर से कभी भी भयभीत नही होंगे, क्योंकि पुलिस इंसपेक्टर की भूमिका में चुस्ती–फुर्ती के साथ–साथ रफ एवं टफ रहने की जरूरत है ताकि गलत मानसिकता वाले लोग नियंत्रण में रह सके।

अब प्रश्न यह उठता है कि अगर डॉक्टर या पुलिस को प्रभावशाली पहचान बनाने हेतु एक खास प्रकार के व्यवहार, तरीके, कुशलता, सोच, जुड़ाव आदि की जरूरत होती है तो क्या एक महिला को भी अपने स्वयं के स्तर पर स्वावलम्बी बनने हेतु इससे सम्बन्धित व्यवहार एवं कौशलता की जरूरत नही है? उत्तर है बिल्कुल जरूरत है और इस प्रकार के व्यवहार एवं कुशलता को जो अपने अन्दर अपनाकर स्वावलम्बन की दिशा में प्रभावशाली पहचान बनाती हैं, उन्नतशील दिखती हैं, सदैव और अच्छा करने की राह को मजबूत करती हैं ऐसी महिला को उद्यमी कहकर पुकारते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर में हम सभी महिला उद्यमियों में क्या–क्या गुण एक सततशील प्रयास की प्रक्रिया के तहत होने चाहिए? इसे समझने, सीखने एवं अपने स्वयं के अन्दर ढालने हेतु नीचे लिखे विमला के उदाहरण की पूरी पृष्ठभूमि को समझना जरूरी होगा।

भोजनावकाश – 1.00 – 2.00

भोजन के पूर्व चर्चा की गयी बातों को निम्नलिखित रूप से उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता को परिभाषित कर गहन समझ बनाई गई।

अगर हम महिलाएं उपरोक्त वर्णन किये गये उद्यम एवं उद्यमी को जोड़ देते हैं तो उसका प्रभाव हम महिलाओं के व्यवहार "उद्यमिता" के रूप में निखार लाता है। इस प्रक्रियाबद्ध उपजती आस्था रूप जुड़ाव से ही उद्यमिता का बीज बोया जाता है। अतः उद्यमिता के बीज को निम्नलिखित चार कड़ीबद्ध स्तरों पर हम महिलाएं अपने रोजमर्रा की जिन्दगी में इसकी महत्ता को समझकर अपने व्यवहार में ढाल सकते हैं–

प्रथम चरण

ज्ञान–विज्ञान (Knowledge/Inclination) x प्रदर्शित दक्षता (Demostrative Skill)	**= उद्यमी योग्यता (Entrepreneurial Ability)**

यदि विमला के उदाहरण को देखें तो इस महिला ने अपने ज्ञान–विज्ञान, जो पुस्तकालय आदि जगहों से सम्पर्क कर हासिल किया और तत्पश्चात इस अर्जित ज्ञान को अपने स्वयं के अन्दर

ढालने हेतु प्रदिर्शित किया। अतः इस प्रकार से विमला का ज्ञान एवं दक्षता के संयोग से स्वयं के अन्दर प्रथम चरण स्वरूप उद्यमीय योग्यता की चिनगारी पैदा हुई।

द्वितीय चरण

उद्यमीय योग्यता (Entrepreneurial Ability) x प्रवृति (Attitude)	= उद्यमीय अभिप्रेरणा **(Entrepreneurial Motivation)**

अब प्रथम चरण के उपरान्त विमला ने अपने स्वयं के अन्दर चिनगारी से प्रज्जवलित हुई उद्यमीय योग्यता को अपने स्वयं की प्रवृति से संजोग कर दूसरे चरण में उद्यमीय अभिप्रेरणा के तहत अपने को जगाया, जुड़ाया एवं आगे बढ़ने के कदम में अग्रसर किया।

तीसरा चरण

उद्यमीय अभिप्रेरणा (Entrepreneurial Motivation) x कर्मठता (Performance)	= उद्यमीय कर्मठता (Entrepreneurial Result)

इस चरण में विमला ने जागो, जुड़ो एवं जगाओ के तहत उद्यमीय अभिप्रेरणा को अपने लक्ष्य से सम्बन्धित कर्मठता को व्यावहारिक रूप में अमल किया जिसके परिणाम स्वरूप विमला की उद्यमीय कर्मठता स्पष्ट रूप से दिखायी देने लगी।

चौथा चरण

उद्यमीय कर्मठता (Entrepreneurial Result) x श्रेष्टता (Standards)	= उद्यमीय नवीनता (Entrepreneurial Standard of Excellence)

यदि विमला आम दिनों के तहत अपनी कर्मठता को दिखाएं लेकिन उसमें कोई नयापन या बिन्दु से हटकर अनूठा प्रभाव नहीं दिखायी देता है तो उद्यमीय उपलब्धि अधूरी रह जाती है। अतः इस चरण में विमला ने अपनी उद्यमीय कर्मठता को उत्तमता/उत्कृष्टता के शिखर तक पहुंचाने की कोशिश की जिसके फलस्वरूप इसका प्रभाव उद्यमीय उपलब्धि के रूप में झलकने लगा।

अतः

उद्यम(Enterprise) x उद्यमी (Entrepreneur)	= उद्यमिता (Entrepreneruship)

इस प्रकार उपरोक्त चारों चरणों को एक महिला उद्यमी स्वरूप विमला के लक्षण से जोड़कर, उसके निर्धारित लक्ष्य/उद्योग से जोड़ दिया जाय तो स्पष्ट रूप से उद्यमिता का जन्म होता है। इसी प्रकार से महिला उद्यमीय स्वरूप विमला के स्वरूप, व्यवहार एवं कौशलता को ”उद्यमिता“ कहते हैं।

किसी उद्यमी के स्वभाव, व्यवहार अथवा कौशल को उद्यमिता कहते हैं। उद्यमी वह व्यक्ति होता है जो किसी व्यापार या उद्योग का संचालन तथा प्रबंध करता है एवं उससे संबधित जोखिम उठाता है। अतः उद्यमिता में :–

1. संकल्पनाओं या विचारों, उत्पादों तथा सेवाओं का चयन एवं नवीनीकरण

2. संसाधनों की उपलब्धि सुनिश्चित कर, प्रबन्धकीय नेतृत्व से संचालित करना।

3. वृद्धि एवं श्रेष्ठता के लिए निरन्तर संघर्ष करके जोखिमों का निवारण करते हुए प्रतियोगिता के वातावरण में अग्रसर होना।

भोजनावकाश के बाद प्रतिभागियों के द्वारा एक अभ्यास के माध्यम से उद्यमी जोखिम, चुनौती एवं उपलब्धि उत्प्रेरणा पर आधारित खेल खेला गया एवं खेल के पष्चात निम्नलिखित बातों को रोजमर्रा के जीवन से जोड़कर विष्लेषण किया गया।

जो व्यक्ति नव–प्रवर्तनों, स्वातंत्रय एवं संप्रभुता, श्रेष्ठ कार्यान्वयन तथा श्रम के प्रति आदर की भावनाओं को महत्व देते हैं उनमें किसी प्रदत्त परिस्थिति में क्रियाषील हो जाने की सामान्य एवं सर्वनिष्ठ अभिवृत्तियों का विकास हो जाता है। उदाहरणतः नव–प्रवर्तनों को महत्व देने वाले व्यक्ति में अवसरों अथवा लक्ष्यों का संसूचन करने हेतु अपनी कल्पनाषक्ति का उपयोग करने की प्रवृत्ति का विकास हो जाता है। ऐसे व्यक्ति में लक्ष्यों, कार्य–प्रणालियों अथवा किसी समस्या से जूझने के उपायों का चयन करते समय, एक सीमा तक जोखिम उठाने की प्रवृत्ति भी रहती है। उद्यमियों के संबंध में ऐसी प्रवृत्तियों के समूह को पहचाना तथा निर्धारित किया गया है। किसी व्यक्ति में इन प्रवृत्तियों का पाया जाना उसके उद्यमी स्वभाव का संकेत देता है तथा उद्यमिता पर आधारित व्यवसाय में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

किसी विषेष परिस्थिति में व्यक्तियों के विभिन्न समूह प्रवृत्तियों की समानता अथवा भिन्नता के कारण एक ही प्रकार की अथवा विभिन्न प्रकार की कार्य–प्रणालियॉ चुन सकते हैं। अतः व्यक्ति के कार्य के किसी पक्ष के संदर्भ में उसकी प्रेरणात्मक, भावनात्मक, संवेदनात्मक तथा संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के स्थानीय संगठन को "प्रवृत्ति" की परिभाषा कहते हैं। इन प्रवृत्तियों की उत्पत्ति को मूल्यों के संयोजनों से संबद्ध पाया जाता है। तदनुसार पूर्वोल्लिखित तथा उद्यमिता के मूल्यों से निम्नलिखित प्रवृत्तियॉ उत्पन्न होती हैं–

- कल्पनाषक्ति तथा अन्तर्ज्ञान के उपयोग की प्रवृत्ति।
- सामान्य जोखिम उठाने की प्रवृत्ति।
- अभिव्यक्ति तथा क्रिया की स्वतंत्रता की प्रवृत्ति।
- आर्थिक अवसरों के खोज की प्रवृत्ति।
- कार्य की सफल सम्पन्नता से संतोष–लाभ की प्रवृत्ति।
- पर्यावरण को परिवर्तित कर सकने में विष्वास रखने की प्रवृत्ति।

- पहल करने की प्रवृत्ति।
- परिस्थिति के विष्लेषण तथा कार्य के नियोजन की प्रवृत्ति।
- उद्यमिता सम्बन्धी क्षमताएं

- **व्यवहारिक क्षमताएं–**

  उद्यमिता के मूल्यों, प्रवृत्तियों तथा अभिप्रेरणा से अनेक ऐसी व्यक्तिगत क्षमताएं उत्पन्न होती है जिनका उपयोग उद्यकिता की संपूर्ण वृत्ति में, उद्यम के चयन, प्रारम्भ, प्रबंध तथा प्रवर्द्धन के दौरान किया जाता है। चूँकि ये क्षमताएं उद्यमी के व्यक्तित्व से संबंधित होती है, इनकी आवष्यकता उद्यम के आकार/विस्तार, स्थान समय या उद्यम की प्रकृति से प्रभावित नही होती है। यह क्षमताएं निम्नवत् हैं–

  - सृजनात्मकता तथा नवीन प्रवर्तन
  - जोखिम उठाना।
  - पहल करना।
  - समस्या हल
  - लगनषीलता
  - कार्य–प्रदर्षन का स्तर एवं गुणवत्ता
  - सूचनाएं प्राप्त करना
  - व्यवस्थित नियोजन।
  - दूसरों को प्रेरित तथा प्रभावित करना।

इसके बाद उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता के परस्पर सहयोग से महिला/ग्रामीण उद्यमी की अग्रसर माइलस्टोन को समझते हुए एक गहन समझ बनाई गई जो निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया।

भावी उद्यमी की मूलभूत अपेक्षाएं

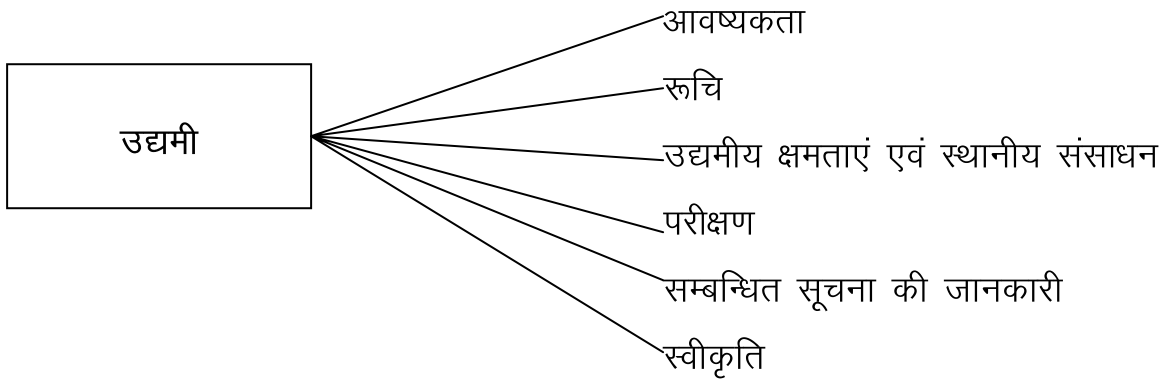

उद्यम, उद्यमी, उद्यमिता के परस्पर सहयोग से
महिला उद्यमी की अग्रसर माइल्स स्टोन

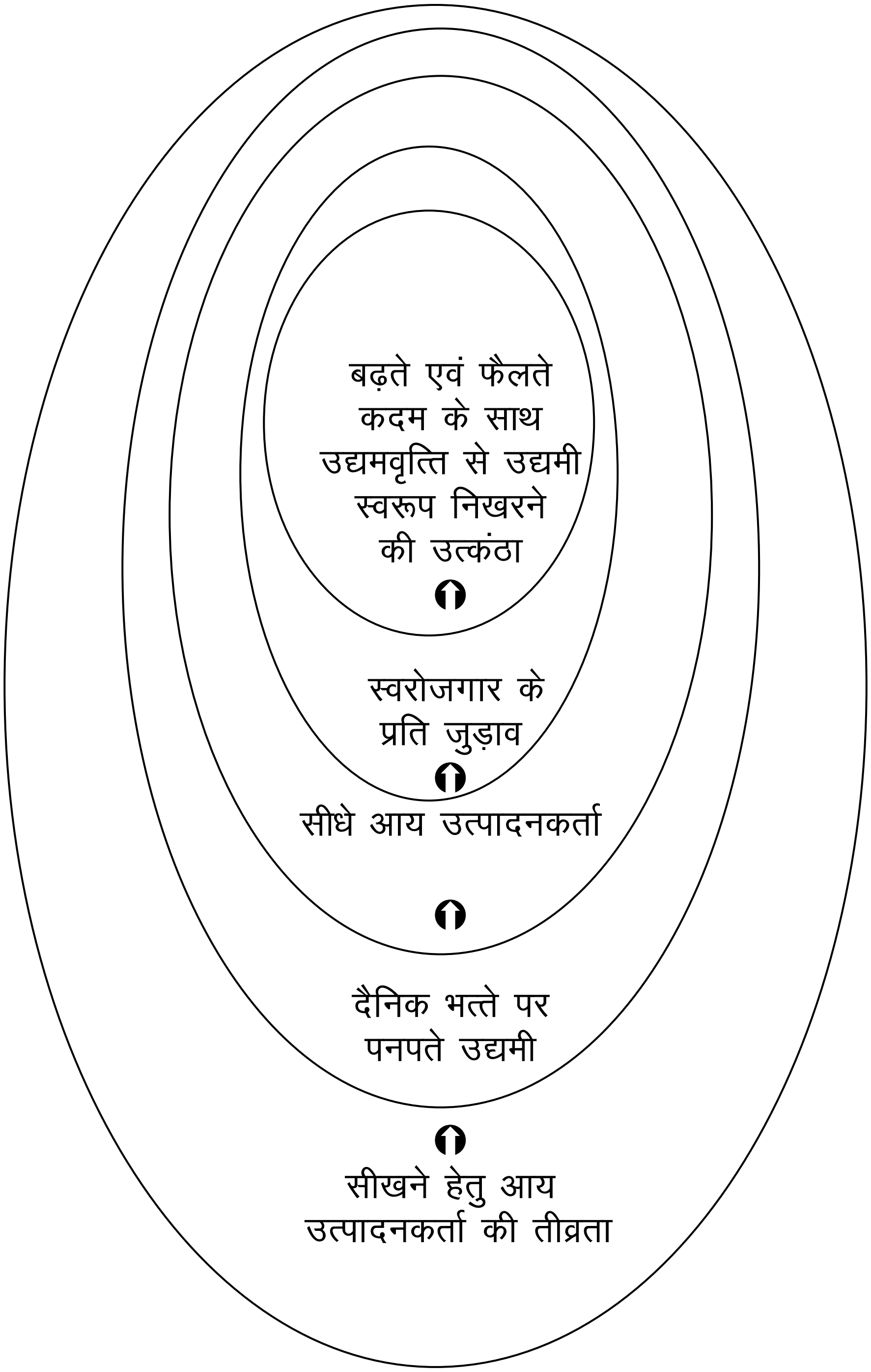

- बेरोजगारी की समस्या से लड़ने के लिये इन सभी के अन्दर एक आदरपूर्ण स्थान, पहचान एवं अस्तित्व खड़ा कर समाज में एक जबरदस्त परिवर्तन एवं बदलाव लाने के लिए।
- अपार महिला श्रम शक्ति का समुचित उपयोग

प्रशिक्षण में आये प्रतिभागी एक व्यावहारिक खेल के दौरान

- गांव से लेकर राज्य एवं राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि के लिए
- हम सभी महिलाओं के बीच अत्यधिक आर्थिक प्रभुत्व के समुचित बटंवारे के लिए
- परिवार, गांव या समाज में बोझिल/बुजदिल के रूप में न बर्दास्त करना।
- हमें अपनी घर की चौखट की आमदनी बढ़ाकर गांव एवं अन्य कसबों की भी आमदनी को बढ़ाना।
- हम तमाम महिलाएं अनेक प्रकार के क्राफ्ट से सदियों से जुड़े हुए हैं परन्तु इसका निष्पक्ष व्यापार नहीं होने की वजह से कार्य करने का वातावरण एवं आमदनी सही रूप में हम सभी को नहीं मिल पाता है।
- एकाधिपत्य कम करने के लिए
- क्षेत्र के कल्याण कार्यो में लाभ के पुनर्निवेश हेतु
- संतुलित क्षेत्रीय विकास के लिए
- युवा शक्ति का उपयोग करने के लिए
- स्वयं सहायता समूह के बचत एवं कर्ज हेतु कार्यक्रमों को और सक्रिय एवं प्रभावशाली बनाने के लिए।

ग्रामीण उद्यमी का चतुष्कोण जोखिम

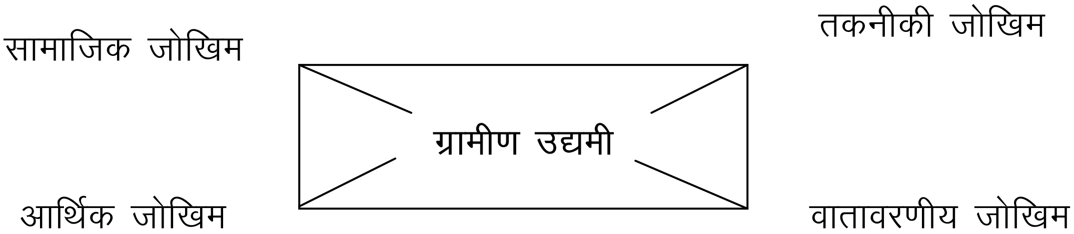

तत्पष्चात् उद्यमी लक्ष्य साधना हेतु टावर बिल्डिग (मिनार बनाना) खेल के जरिए निम्नलिखित बात निचोड़ के रूप में निकल कर आया।

- किसी भी कार्य में लक्ष्य साधना को समझना।
- सहायता करने की क्रिया को समझना।
- सहायता करने एवं लेने के परिणाम को जानना।
- तय करने की प्रक्रिया के तत्वों का जानना।
- जीवन के सिद्धान्तों को समझना एवं उनका उद्यम पर प्रभाव को समझना।
- अपने चारों तरफ फैले हुए व्यावसायिक अवसरों की तरफ जागरूकता।
- व्यावसायिक अवसरों का अपनी क्षमता के अनुसार चुनाव करना।
- पारस्परिक व्यवसाय से हटकर कुछ करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करना।

साथ ही साथ उपरोक्त लक्षणों को परियोजना की क्षमता के साथ समझना एवं इसे व्यावहारिक स्वरूप देकर उद्यम स्थापना की प्रक्रिया को शुरू करना।

इस प्रकार से पहले दिन का प्रषिक्षण समाप्त हुआ।

दूसरा दिन–25 नवम्बर 2005

दूसरे दिन के प्रशिक्षण सत्र की शुरूआत सुबह 9.00 बजे की गई। दूसरे दिन सभी प्रतिभागी क्षेत्रीय भ्रमण पर ताराग्राम से 15 किमी0 दूर मजरागॉव नामक जगह गये। जहॉ डी0ए0 द्वारा समग्र ग्राम विकास योजना चलाई गयी है। यहॉ जाकर प्रषिक्षणार्थियों ने दो यूनिटों का गहन रूप से भ्रमण किया। पहला यूनिट मुर्गी पालन तथा दूसरा भैंस पालन की यूनिट प्रषिक्षणार्थियों ने देखा। साथ ही सभी प्रतिभागी ओरछा मंदिर देखने भी गये।

गॉव में इन यूनिटों को देखने के पश्चात् सभी प्रतिभागी गाँव से वापस आये एवं डी0ए0 में भोजन ग्रहण किया। भोजनावकाष के बाद सत्र में मुख्य रूप से भ्रमण के उपरान्त प्रतिभागियों के अनुभवों को एक–दूसरे के साथ बाँटने हेतु रखा गया था। सबसे पहले सभी प्रतिभागियों ने भ्रमण में अनुभव किये गये विचारों को व्यक्तिगत रूप से व्यक्त किया। जो निम्न प्रकार हैं:

श्री संदीप श्रीवास्तव ने परियोजना की उद्यम चयन क्रमबद्ध तरीके से चित्रों एवं खेल के द्वारा उद्यम के प्रकार एवं उद्यम चयन प्रक्रिया पर विचार–विमर्ष किया।

सर्वप्रथम उद्यम चयन के सम्बन्ध में बताते हुए कहा कि उद्यम चयन के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर गहन रूप से चर्चा की गई।

- आपका व्यक्तित्व
- आपकी पारिवारिक स्थिति
- शारीरिक क्षमता
- परम्परागत व्यवसाय
- वित्तीय सहायता

उपरोक्त सभी बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए प्रशिक्षणार्थियों को बिन्दुवार व्यवसाय चयन कैसे किया जाय इस सम्बन्ध में चित्र और उदाहरणों के द्वारा सहयोग लेते हुए इस प्रकार बताया गया।

Man

↓

Money

↓

Management

↓

Machinary

↓

Raw Material

↓

Market

इसके पष्चात व्यवसाय चयन के पक्षों को बारीकी से समझने के लिए एक उदाहरण ″माया की कहानी″ प्रशिक्षणार्थियों की दी गई। ताकि वे उसकी अच्छाई एवं कमियों का

आकलन कर व्यवसाय चयन प्रक्रिया के मुख्य बिन्दुओं पर ध्यान दे सके। यह कहानी इस प्रकार है।

माया की कहानी

जनपद रायबरेली के महाराजगंज विकासखण्ड के जरैला गांव है जिसमें एक माया नाम की निर्धन 28 वर्षीय महिला रहती है। माया का पति मजदूरी करके अपने परिवार का पालन–पोषण कर रहा है। माया के दो छोटे बच्चे हैं। माया का परिवार कभी–कभी दिन में एक बार ही भोजन कर पाता है। माया अपनी निर्धनता से बहुत दुखी है और कुछ उद्यम करके अपने परिवार को सहयोग करना चाहती है। वह कैसे व्यवसाय को प्रारम्भ करे इस पर वह विचार करना शुरू करती है। माया के पास रू0 100 है। उसकी मॉ मिट्टी के बर्तन बनाना जानती है और उस गांव में मूलू मिट्टी पाई जाती है। मूलू मिट्टी का गुण है कि वह बहुत मुलायम एवं जल्दी सूखने वाली होती है। इस मिट्टी से बर्तन, घड़ा, खिलौना, बिड़्स आदि बनाई जा सकती है। माया अपनी मॉ से घड़ा बनाना सीखती है। घड़ा बनाना सीखने के पष्चात् माया बाजार से ब्रुष एवं रंग खरीदती है। वह बाजार रिक्षे से रू0 2 किराया देकर जाती है। बाजार से माया रू0 15 का ब्रुष एवं रू0 35 का रंग खरीदकर रिक्षे से रू0 2 देकर वापस आती है। घड़ा बनाने में रू0 2 का रंग खर्च होता है। माया मूलू मिट्टी से 2 घड़े बनाती है और उसे रंगकर धूप में सुखाती है। माया दोनों घड़ों को लेकर बस से हाट जाती है। उसे बस का रू0 5 किराया देना पड़ता है। अपने बच्चों को देखने के लिए उसे रिष्तेदार को रू0 2 देने पड़ते हैं। बस से जाते समय उसका एक घड़ा टूट जाता है। जब वह हाट पहुचती है तो उसे रू0 5 हाट में दुकान लगाने का किराया देना पड़ता है। माया वहां पहुॅचकर देखती है कि मिट्टी के बर्तनों की अनेक दुकानें हैं। दुकानदारों के पास रंग–बिरेंगे सुन्दर मिट्टी के घड़े बिक रहे हैं। बहुत कोषिषों के बाद माया का एक घड़ा रू0 10 में बिकता है।

इन सब स्थितियों को देखते हुए उद्यम कार्यों की व्यावसायिक बिन्दुओं पर सुझाव दीजिए।

उपरोक्त कहानी में प्रषिक्षणार्थियों को चार समूहों में बाटा गया और उनके विचारों के अनुसार निम्नलिखित बिन्दु निकलकर आये जिससे व्यवसाय चयन और अधिक सुविधाजनक हो सके।

- अनुभव के अनुसार
- बाजार होने के कारण
- सीजन के अनुरूप
- कच्चे माल की उपलब्धता

- तकनीकी ज्ञान
- वित्तीय क्षमता
- सूचनाओं का संग्रह
- बाजार की समस्या

इसके उपरान्त व्यवसाय के चयन करने के नई तकनीक को प्रषिक्षणार्थियों को बताया गया।

समस्या	आवष्यकता	उद्यम
बीमारी	दवा	क्लीनिक
पैदल चलना	यातायात	रिक्षा या आटो
गर्मी लगना	पंखा/कूलर	पंखे की दुकान

उद्यम के प्रकार के लिए चित्रों के द्वारा प्रषिक्षणार्थियों को वर्गीकरण के सम्बन्ध में चर्चा की गई। जो इस प्रकार थे।

1. पषुपालन
2. व्यापार
3. कृषि आधारित उद्यम
4. सर्विस
5. फेब्रिकेषन
6. किटाणु से सम्बन्धिम उद्यम आदि।

एक व्यवसाय से कई उद्यम को चयन करने के लिए प्रषिक्षणार्थियों को तीन चित्रों (साईकिल, सिलाई मषीन एवं भैंस पालन)के माध्यम से व्यवसाय विस्तार पर चर्चा की गई।

इस प्रकार सायं 6.00 बजे दूसरे दिन के प्रशिक्षण सत्रों का समापन किया गया।

तीसरा दिन–26 नवम्बर, 2005

प्रशिक्षण के तीसरे एवं अंतिम दिन सभी प्रतिभागी सुबह का नास्ता लेने के बाद 9.00 बजे प्रशिक्षण कक्ष में उपस्थित हुए। प्रशिक्षण की शुरूआत के पूर्व प्रतिदिन की भांति औपचारिक रूप से भजन एवं सामूहिक प्रेरणा गीत गाये गये। सहभागियों में से श्री संदीप श्रीवास्तव द्वारा सीखने–सीखाने की प्रक्रिया में पहले दिन का पुर्नवालोकन किया गया।

सभी प्रतिभागियों ने अपने–अपने समूहों पर आधारित व्यक्तिगत विचार व्यक्त किये। सभी के व्यक्तिगत विचार सुनने के पश्चात् नीड के श्री संदीप श्रीवास्तव ने पूर्व दिवस के प्रषिक्षण कार्यक्रम की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए व्यवसाय योजना के बारे में विस्तार से चर्चा प्रारम्भ की।

श्री श्रीवास्तव ने व्यवसाय योजना क्या है, इसे क्यों निर्माण करने की आवष्यकता है एवं इसको किस प्रकार से बनाया जाय उसके बारे में चर्चा करते हुए व्यवसाय योजना के महत्व के बारे में बताया। व्यवसाय योजना निम्न कारणों के लिए आवष्यक बताया–

- उद्यम समस्याओं की जानकारी के लिए व्यवसाय योजना आवष्यक है।
- बाजार व कच्चे माल के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
- खर्चो का अनुमान लगाना।
- कितनी पूॅजी से उद्यम शुरू होगा इसके बारे में आकलन करना।
- उद्यम सफल होगा या असफल, के लिए व्यवसाय योजना बनाना आवष्यक है।
- बैंक ऋण की आवष्यकता के लिए।

प्रशिक्षण कक्ष का एक दृष्य

उपरोक्त बिन्दुओं की चर्चा करते हुए व्यवसाय योजना के निम्नलिखित

बिन्दुओं पर उदाहरण एवं चित्रों के साथ प्रतिभागियों के मध्य पूर्ण चर्चा की गई।

1. भूमि व भवन
2. मषीन व उपकरण
3. कच्चा माल
4. मानव शक्ति
5. दैनिक खर्च
6. स्थाई लागत
7. कार्यकारी लागत
8. परियोजना की कुल लागत
9. अनुमानित बिक्री
10. वित्त स्रोत

लाभ विष्लेषण के लिए निम्न बिन्दुओं पर प्रषिक्षणार्थियों के मध्य चर्चा की गई–

- बिक्री
- उत्पादन लागत (कच्चा माल + मानव शक्ति + दैनिक खर्च)
- देखभाल एवं मरम्मत
- बिक्री एवं प्रषासकीय व्यय
- ऋण विष्लेषण
- अन्य खर्च
- कुल लाभ

उपरोक्त विषय की समझ एवं जानकारी के लिए प्रतिभागियों के मध्य चार केष स्टडी (1–जरदोजी क्राफ्ट, 2–सौन्दर्य प्रषाधन की दुकान, 3–साईकिल मरम्मत 4– चाट की दुकान) के माध्यम से प्रषिक्षणार्थियों का समूह बनाकर केष स्टडी के द्वारा अवलोकन करते हुए प्रतिभागियों ने चार्ट के माध्यम से अपने–अपने केष स्टडी का प्रस्तुतीकरण किया।

1.00–2.00 बजे भोजनावकाश

भोजनावकाश के बाद सत्र की शुरूआत व्यवसाय को स्थापित कर उसका क्रमबद्ध ढंग से कैसे विस्तार हो इस पर चर्चा की गई। इस विषय पर चर्चा एवं समझ के लिए

खरगोष की कहानी के चित्रों द्वारा प्रतिभागियों के साथ सामूहिक रूप से भागीदारी की गई।

सरकारी योजनाओं के अन्तर्गत निम्नलिखित विभागों एवं योजनाओं की जानकारी के बारे में पूर्ण रूप से कार्यक्षेत्र को देखते हुए चर्चा एवं अवलोकन किया गया। यह योजनाओं बिन्दुवार इस प्रकार थी–

- स्वर्ण जयन्ती स्वरोजगार योजना
- प्रधानमंत्री रोजगार योजना
- खादी ग्रामोद्योग से सम्बन्धित योजनायें
- बैंक से सम्बन्धित ऋण एवं अन्य सुविधा की जानकारी
- जिला उद्योग केन्द्र से सम्बन्धित योजनाओं की जानकारी दी गई।

अन्त में डी0ए0 झॉसी के श्री संतोष पाठक ने उपस्थित सभी सदस्यों एवं नीड लखनऊ से आये प्रषिक्षकों का सहृदय अभिनन्दन किया और कहा कि तीन दिवसीय यह प्रषिक्षण कार्यक्रम की लाभप्रदता एवं क्षेत्रीय स्तर पर उसकी उपादेयता के बारे में प्रषिक्षणार्थियों से विचार जाने। प्रषिक्षणार्थियों ने बताया कि प्रषिक्षण को गुणवत्तापरक बनाने के उद्‌देष्य से चित्र, खेल, चार्ट, उदाहरण, केस स्टडी आदि का उपयोग अति सराहनीय रहा। जमीनी स्तर पर यह प्रषिक्षण कार्यक्रम कार्य की गुणवत्ता बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। इसके दौरान यह भी व्यक्त किया गया कि हमें आशा है प्रशिक्षण का अपने कार्यक्षेत्र में भरपूर उपयोग करेंगे यदि फिर भी कहीं हमारी आवश्यकता महसूस हो तो पत्र अथवा फोन द्वारा अवश्य सूचित करें किन्तु फिर भी हम लोग आपकी संस्थाओं से बराबर सम्पर्क रखेंगे और कार्य क्षेत्र में आने वाले कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास करेंगे। अन्त में डी0ए0 के श्री संतोष पाठक ने प्रषिक्षण में आये सभी प्रषिक्षणार्थियों से तीनों दिन चले प्रषिक्षण कार्यक्रम के बारे में पूर्ण जानकारी लेते हुए प्रषिक्षणार्थियों का सुझाव जाना। इसी के साथ तीन दिवसीय प्रषिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन करते हुए समापन किया गया।

समाप्त

कार्यक्रम मूल्यांकन पत्र

कार्यक्रम का नाम – माइक्रो–इण्टरप्राइज कार्यक्रम

दिनांक – नवम्बर 24–26, 2005

प्रषिक्षण स्थल – डी0ए0, तारा ग्राम, ओरछा, झॉसी

क्र0 स0	विवरण	अति उत्तम (प्रतिषत में)	उत्तम (प्रतिषत में)	अच्छा (प्रतिषत में)	संतोषजनक (प्रतिषत में)	खराब (प्रतिषत में)
1	कार्यक्रम की रूपरेखा	10	45	25	20	0
2	कार्यक्रम की विषय–वस्तु	10	55	15	20	0
3	कार्यक्रम की अवधि	0	5	25	30	40
4	संसाधन व्यक्ति	30	35	25	10	0
5	प्रशिक्षुओं की प्रषिक्षण में सहभागिता	20	25	40	15	0
6	प्रशिक्षण पुस्तिका	35	40	25	0	0
7	प्रशिक्षण साधन	30	45	25	0	0
8	प्रशिक्षण हॉल/अन्य सुविधायें	45	25	30	0	0
9	आपके कार्य के लिए प्रषिक्षण की उपयोगिता	25	50	25	0	0
10	रहने–खाने का प्रबन्ध	55	40	5	0	0
11	प्रशिक्षण का कुल संचालन	40	40	20	0	0

क्र0 स0	प्रषिक्षण में आये प्रषिक्षको का नाम	नीड–प्रषिक्षक के ज्ञान एवं व्यावहारिक अनुभव की स्पष्टता											
		तथ्य का प्रस्तुतीकरण (विषय वस्तु) प्रतिषत में			विषय वस्तु की उपयोगिता प्रतिषत में			स्पष्ट अभिव्यक्ति की क्षमता प्रतिषत में			विषय का प्रस्तुतीकरण (जीवन के उदाहरण के साथ सरल एवं व्याख्या)		
		अच्छा	सामान्य	खराब	अच्छा	सामान्य	खराब	अच्छा	सामान्य	खराब	अच्छा	सामान्य	खराब
1	श्री अनिल के. सिंह	100	0	0	85	15	0	80	20	0	90	10	0
2	श्री संदीप श्रीवास्तव	100	0	0	85	15	0	80	20	0	90	28	0